स्वतंत्रता दिवस पर बधाई

धन्य भाग्य हम हो चुके अब वास्तविक स्वतंत्र ।

भीड तंत्र से किन्तु अब रक्षणीय जनतंत्र ।।

रक्षणीय जनतंत्र न जन बल अतिवादी हो ।

मिले उसे वह वस्तु कि जिसका अधिकारी हो ।।

नियम सर्व अनुपाल्य सुदंडित अपराधी हो ।

भारत मां का प्रथम सर्वजन आराधी हो ।।

नवल आज उत्साह विगत के शल्य निकालो ।

पुरुषार्थी हो निज मन से वैफल्य निकालो ।।

पंचदशी जो शती वहां तक सर्वश्रेष्ठ थे ।

जग में तुम्ही वरेण्य ज्ञान धन युक्त ज्येष्ठ थे ।।

पुनः वही हो स्थान बुद्धि वैभव पहचानो ।

निज बल का अज्ञान मात्र बाधा तुम जानो ।।

लटके ग्रीवा मध्य राष्ट्र उन्नति के बाधक ।

चूर्ण करो उन पाषाणों को विद्याराधक ।।

सब से ऊपर केसरिया रंग शौर्य दिखाता ।

हो सकती है शांति उसीसे यही सिखाता ।।

शांति श्वेत है निश्चित करती विपुल समुन्नति ।

उससे होती हरित भूमि जनहित की परिणति ।।

शठ से विनय कभी क्या होता सत्फलदायक ।

क्षुद्रों की अवहेला जन की त्रास विधायक ।।

कृतनिश्चय तुम बढ़ो रिपु दमन को नवनायक ।

हरो त्वरित जनभीति राष्ट्र के बन उन्नायक ।।

- शिव कुमार मिश्रा
  15 अगस्त 2020
  भोपाल